موضوع الخطبة : الناقض الخامس (الاستهزاء بشيء من أمور الدين)

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

पांचवां भंजक:

(धर्म के किसी आदेश का उपहास करना)

الناقض الخامس (الاستهزاء بشيء من أمور الدين)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्‍र्वश्रेष्‍ठ बात अल्‍लाह की बात है,और सर्वोत्‍तम मार्ग मोंह़म्‍मद सलल्‍लाहु अलैहि वसल्‍लम का मार्ग है,दुष्‍टतम चीज़ (धर्म में) अविष्‍कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्‍कार की गई प्रत्‍येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्‍येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्‍येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

अल्‍लाह के बंदो!अल्‍लाह का तक़्वा (धर्मनिष्‍ठा) अपनाएं और उस का सम्‍मान करें,उसकी आज्ञा मांनें और उस के अवज्ञा से बचें,और जान लें कि لاالہ الا اللہ اور محمد رسول اللہ की गवाही देने से यह अनिवार्य हो जाता है कि अल्‍लाह का सम्‍मान,बनी सलल्‍लाहु अलैहि वसल्‍लम और इस्‍लाम धर्म का सम्‍मान किया जाए,चाहे आस्‍था का मामला हो अथवा पूजा व प्रार्थना का अथावा दुनयावी मामलों एवं व्‍यवहारों का।शहादतैन (لاالہ الا اللہ اور محمد رسول اللہ) को अपने व्‍यवहार में अपनाने एवं ईमान में सत्‍य होने का यह चिन्‍ह है,अल्‍लाह तआ़ला ने अपने ऊपर और रसूल के ऊपर ईमान लाने को अपना सम्‍मान,अपने रसूल एवं अपने धर्म के आदर व सम्‍मान के साथ उल्‍लेख किया है,अल्‍लाह का फरमान है:

(إنا أرسلناك شاهدا ومبشرا ونذيرا * لتؤمنوا بالله ورسوله وتعزروه **وتوقروه** وتسبحوه بكرة وأصيلا)

अर्थात: (हे नबी!) हम ने भेजा है आप को गवाह बनाकर तथा शुभ सूचना देने एवं सावधान करने वाला बना कर।ताकि ईमान लाओ अल्लाह एवं उस के रसूल पर।और सहयता करो आप की,तथा आदर करो आप का,और अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करते रहो प्रात: तथा संध्या।

अर्थात:ताकि तुम इस्लाम धर्म की सहायता के द्वारा अल्लाह की सहायता करो,उसका आदर व सम्मान करो और सुबह व शाम उस की प्रशंसा करो।

धर्म का उपहास करना इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!धर्म के आदर व सम्मान का विपरीत यह है कि अल्लाह के धर्म के किसी आदेश तथा चिन्ह का,अथवा अल्लाह के रसूल का,अथवा उस के पुण्य अथवा यातना का उपहास किया जाए,जिस ने ऐसा किया उस न कुफ्र किया,धर्म का उपहास करना इस लिय क़ुफ्र है कि इस स धर्म को लागू करने वाले का उपहास होता है,जो कि अल्लाह तआ़ला है,और यह सरीह़ (स्पष्ट) कुफ्र है,क्योंकि हमारे ऊपर अनिवार्य है कि अल्लाह का आदर करें,न कि उस का अनादर करें,और उपहास वह व्यक्ति नहीं करता जो अल्लाह का सम्पूर्ण आदर एवं सम्मान करता हो,अल्लाह के नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के लाए हुए धर्म का सम्मान करता हो,बल्कि उपहास वह व्यक्ति उड़ाता है जिस के

हृदय में निफाक (द्विधावाद) होता है।अल्लाह का शरण।यह बात ज्ञात भी है कि मोनाफिकत (द्विधावाद) का एक सबसे प्रसिद्ध चिन्ह यह है कि धर्म का उपहास करे ?इब्ने सादी रहि़महुल्लाह फरमाते हैं:अल्लाह और उस के रसूल का उपहास करना ऐसा कुफ्र है जो धर्म से बाहर कर देता है,क्योंकि इस्लाम धर्म का आधार अल्लाह,उस के धर्म और उस के रसूल के सम्मान पर आधारित है,और उन में से किसी एक भी उपहास करना इस आधार के विपरीत और इस के बिल्कुल विरुद्ध है।[1]

धर्म का उपहास करने वाला काफिर है,इसके शरई़ प्रामण

अल्लाह के बंदो!पवित्र कुरान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि धर्म के किसी भी आदेश का उपहास करने वाला काफिर है,अल्लाह का कथन है:

ولئن سألتهم ليقولن إنما كنا **نخوض ونلعب** قل أبالله وآياته ورسوله كنتم **تستهزئون** * لا تعتذروا **قد كفرتم** بعد إيمانكم

अर्थात:और यदि आप उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रह थे आप कहिये कि क्या अल्लाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?तुम बहाने न बनाओ,तुम ने अपने ईमान के पश्चात कुफ्र किया है।

यह आयत इस बात का प्रमाण है कि धर्म के किसी भी आदेश का उपहास करने वाला काफिर है,चाहे वह मज़ाक़ अल्लाह के संबंध में हो

---

[1] "تیسیر الکریم الرحمن فی تفسیر کلام المنان" **व्याख्या सूरह:**التوبۃ:٦٥

अथवा उस की आयतों अर्थात क़ुरान के संबंध में हो,अथवा उस के रसूल के संबंध में हो,और चाहे उपहास करने वाला गंभीर हो अथवा गंभीर न हो।

इब्ने अबी ह़ातिम ने इस आयत की व्याख्या में अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है कि:एक व्यक्ति ने ग़ज़वा-ए-तबूक के अवसर पर किसी सभा में कहा: (मैं ने अपने इन क़ारियों के जैसा (अर्थात नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के सह़ाबा के जैसा) पेट पालक,झूटा और शत्रु से मुठभेड़ के समय कायरता से काम लेने वाला नहीं देखा)।उस पर सभा में उपस्थित एव व्यक्ति ने कहा: (तुम ने झूट कहा,बल्कि तुम मोनाफिक (द्विधावादी) हो,मैं यह बात अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से अवश्य बताऊंगा),अत: यह सूचना आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली और क़ुरान अवतरित हुआ,अ़ब्दुल्लाह कहते हैं:मैं ने उस व्यक्ति को देखा कि वह अल्लाह के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊंटनी की रस्सी से लटका हुआ था,पत्थरों की ठोकरें खाए जा रहा था और कहे जा रहा था: (ऐ अल्लाह के रसूल! हम तो यूं ही आपस में हंस बोल रहे थे) और रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम यह उत्तर दिये जा रहे थे: (क्या अल्लाह,उस

की आयतें और उस का रसूल ही तुम्हारे हंसी मज़ाक़ के लिए रह गए हैं?)।[2]

विद्वानों की इस बात पर सहमति है कि धर्म का उपहास करने वाला काफिर है

ऐ मोमिनो!धर्म का उपहास करने वाला काफिर है,यह एक ऐसा मामला है जिस पर विद्वानों की सर्वसम्मति है,वह व्यक्ति जो किसी ऐसी चीज़ का उपहास करे जिस में अल्लाह का अथवा क़ुरान का अथवा रसूल का उल्लेख हो,उस के विषय में शैख सुलैमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मोह़म्मद बिन अ़ब्दुल वहाब रह़िमहुल्लाह ने कहा कि वह इस अ़मल क कारण काफिर हो जाता है,क्योंकि वह रुबूबियत (अल्लाह के रब होन) एवं रिसालत (मोह़म्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने) के सम्मान में धृष्टता करता है,जो कि एकेश्वरवाद के विरुद्ध है,इस लिए विद्वानों की स्र्वसम्मति है कि इस प्रकार का अ़मल करने वाला व्यक्ति काफिर है।

अत: जो व्यक्ति अल्लाह,अथवा उसकी पुस्तक,अथवा उस के रसूल,अथवा उस के धर्म का उपहास करे वह काफिर है,यद्यपि वह हंसी

---

[2] इस ह़दीस को शैख मुक़्बिल वादेई़ रह़िमहुल्लाह ने "الصحيح المسند من أسباب النزول" पृष्ठ संख्या:१२६ में ह़सन कहा है।

उपहास में ही ऐसा कर रहा हो,और उपहास के उद्‌दश्य से ऐसा न कहा हो,इस पर र्स्वसम्मति है।[3]

धर्म का उपहास करने की धमकी व मनाही

ऐ मोमिनों के समूह!हमारे ऊूपर अनिवार्य है कि हम ज़बान की गलतियों से सचेत रहें,क्योंकि ज़बान ही मनुष्य के नरक में जाने का सर्वाधिक कारण बनती है।जैसा कि मोआ़ज़ बिन जबल रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस में आया है कि उन्होंने नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा:क्या हम जो बोलते हैं,उस पर भी हमारी पकड़ होने वाली है?आप ने फरमाया:ऐ मोआ़ज़!तेरी मां तुझे गुम पाए,लोगों को नरक में उन के ज़बानों के कारण ही मुंह के बल-अथवा फरमाया:नथुनों के बल-फेंका जाएगा।[4]

दूसरी ह़दीस है कि:बंदा एक ऐसा कल्मा ज़बान से निकालता है जो अल्लाह की अप्रसन्नता का कारण होता है उस के पास उस का कोई महत्व भी नहीं होता किन्तु उस के कारण वह नरक में चला जाता है।[5]

क़ुरान में आया है: ويل لكل همزة لمزة

---

[3] "تیسیر العزیز الحمید فی شرح کتاب التوحید" شرح باب: من هزل بشیء فیه ذکر الله أو القرآن أو الرسول

[4] इस ह़दीस को अह़मद (५/३३१) आदि ने रिवायत किया है और के "المسند" शोधकर्ताओं ने प्रमाणों के आधार पर इसे सह़ी कहा है,ह़दीस संख्या: (२२०१६)

[5] इस ह़दीस को बोखारी (६४७८) ने अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

अर्थात:विनाश हो उस व्यक्ति का जो कचोके लगाता है और चौंटे करता रहता है।

तथा अल्लाह अधिक फरमाता है: ما يلفظ من قول إلا لديه رقيب عتيد.

अर्थात:वह नहीं बोलता कोई बात मगर उसे लिखने के लिये उस के पास एक निरीक्षक तय्यार होता है।

धर्म के उपहास करने के व्यावहारिक उदाहरण

अल्लाह के बंदो!इस्लामी विद्वानों व मुसलेहीऩ (सुधारकों) एवं दाइ़यों (अल्लाह की ओर बोलाने वालों) का भी धर्म के उपहास करने का एक प्रकार है,क्योंकि इस्लामी विद्वान ये पैगंबरों के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं,वे धर्म के ज्ञानी हैं,अत: जो व्यक्ति किसी विद्वान का उपहास करे केवल इस लिए कि वह विद्वान है तो उस ने कुफ्र किया,अथवा जो व्यक्ति किसी दाई़ (अल्लाह की ओर बोलाने वाला) का उपहास करे इस लिए कि वह पुण्य का आदेश देता है अथवा पाप से रोकता है तो उस ने कुफ्र किया,हमारे लिए यह अनिवार्य है कि विद्वानों एवं दाइ़यों का सम्मान किया जाए,क्योंकि अल्लाह ने क़ुरान में उन के उच्च महत्व का उल्लेख किया है,इस लिए मोमिन के लिए अनिवार्य है कि अल्लाह और उस के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिसे सम्मानित एवं आदरणीय बताया है,वह भी उस का सम्मान करें,अल्लाह का कथन है:

يرفع الله الذين آمنوا منكم والذين **أوتوا العلم درجات**

अर्थात:ऊँचा कर देगा अल्लाह उन को जो ईमान लाये हैं तुम में से तथा जिन को ज्ञान प्रदान किया गया है कई श्रेणियाँ।

और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस है:".....ज्ञान वालों के लिए आकाशों में बसने वाले,पृथ्वी पर रहने वाले और पानी के अंदर मछलियां भी क्षमा की दुआ़ करती हैं।नि:संदहे एक विद्वान एवं ज्ञानी की एक आ़बिद (पूजारी) पर ऐसी ही प्राथमिकता है जैसे कि चौदहवीं के चाँद की प्रत्येक सतारों पे होती है,नि:संदेह ओ़लमा (इस्लामी विद्वान) पैगंबरों के वारिस (उत्तराधिकारी) है और पैगंबरों ने कोई दिरहम व दीनार विरासत में नहीं छोड़ा।उन्होंने ज्ञान की विरासत छोड़ी है।जिस ने उसे प्राप्त्ा कर लिया उस ने बड़ा भाग्य (अति भाग) पाया"।[6]

ऐ मोमिनों के समूह! धर्म के उपहास करने में आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत का उपहास करना भी शामिल है,दाढ़ी रखने का उपहास करना,टखने तक एज़ार (लुंगी अथवा पाजामा) पहनने का उपहास करना,अथवा मिस्वाक करनें का उपहास करना,अथवा हिजाब एवं नकाब का उपहास करना आदि।

कुछ गैबी मामलों का उपहास करना और उन का अनादर करना भी उपहास करने में शामिल है,उदाहरण स्वरूप स्वर्ग अथवा नरक का

---

[6] इस ह़दीस को अह़मद(5/196)ने रिवायत किया है और के शोधकर्ताओं ने इसे ह़सन लेग़ैरेहि माना है।

उपहास करना,जैसे यह कहना:स्वर्ग क्या चीज़ है?नरक क्या चीज़ है?इत्यादि।

कुछ आस्था संबंधित मामलों एवं चीज़ों का उपहास करना भी इस में शामिल है,जैसे सह़ाबा के न्याय,आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा की शुद्धता व शुचिता,यह कुफ्र है,क्योंकि यह क़ुरान को झुठलाना होता है,क्योंकि अल्लाह तआ़ाला ने आप के सह़ाबा की प्रशंसा की है और उन से अपनी प्रसन्नता जताई है,जैसा कि सूरह التوبہ[7],सूहर الفتح,[8]सूरह الحشر[9],में आया है।इसी प्रकार से आयशा रज़ीअल्लाहु अंहा की शुद्धता व शुचिता और मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की लांछन से उस की मुक्ति की गवाही भी दी है,क्या इस के पश्चात भी यह जाएज़ है कि कोई आए और सह़ाबा का उपहास करे और नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के मान-सम्मान पर कीचड़ उछाले,मानो अल्लाह ने अपने नबी के लिए ऐसे सह़ाबा और ऐसी पत्नी का चयन किया है जो सदाचारी एवं सालेह नहीं थे?कदपि नहीं!

ऐ लोगो! उपहास करने में स्पष्ट कथन एवं कार्य अथवा किसी पत्रिका अथवा अन्य मीडिया में स्पष्ट लेख प्रकाशित करना भी शामिल है,तथा

---

[7] आयत:१००

[8] आयत:२९

[9] आयत:८-९

अस्पष्ट रूप से उपहास करना भी इस में शामिल है जैसे आंख और हाथ से इशारा करना और जबान निकालना आदि।[10]

ज्ञात हुआ कि उपहास का कोई मामूली रूप भी क्षमा किये जाने वाला नहीं है,बल्कि उस का मामूली रूप भी उस के बड़े रूप के जैसा ही है,अल्लाह का शरण,जिस प्रकार का भी उपहास हो सब एक समान है।

धर्म का उपहास करने वालों के प्रति शासकों एवं मुसलमानों का दायित्व

ऐ लोगो!अल्लाह तआ़ला अथवा उस के नबी का उपहास करने वाले की हत्या शासक के लिए अनिवार्य हो जाता है।

अल्लाह के बंदो!जो व्यक्ति किसी को अल्लाह अथवा रसूल अथवा धर्म का उपहास करता हुआ देखे,उस के लिए अनिवार्य है कि उस का खंडन करे और चुप न रहे,कम से कम उस सभा से उठ कर चला जाए क्योंकि ऐसे लोगों के सभा में प्रसन्नता के साथ बैठने से वह काफिर हो जाता है और इस्लाम से निकल जाता है,जैसा कि अल्लाह का फरमान है:

وقد نزل عليكم في الكتاب أن إذا سمعتم آيات الله يكفر بها ويستهزأ بها **فلا تقعدوا معهم** حتى يخوضوا في حديث غيره إنكم إذا مثلهم إن الله **جامع** الكافرين والمنافقين في جهنم جميعا

---

[10] **शैख मोह़म्मद बिन अ़तीक़ रह़िमहुल्लाह ने अपनी पुस्तक:"سبيل النجاة والفكاك"में इस का उल्लेख किया है।**

अर्थात:और उस (अल्लाह) ने तुम्हारे लिए अपनी पस्तक (क़ुरान) में यह आदेश उतार दिया है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों को अस्वीकार किया जा रहा है,तथा उन का उपहास किया जा रहा है,तो उन के साथ न बैठो,यहाँ तक कि वह दूसरी बात में लग जायें।नि:संदेह तुम उस समय उन्हीं के समान हो जाओगे।निश्चय अल्लाह मोनाफिकों (द्विधावादियों) तथा काफिरों सब को नरक में एकत्र करने वाला है।

ऐ विश्वास वाले लोगो!इस आयत पर विचार करें!जिस प्रकार से वह दुनिया के सभा में धर्म का उपहास करने वालों के साथ बैठे रहे,उसी प्रकार से आखिरत में नरक के अंदर भी उन के साथ वह भी यातना पाएंगे,अल्लाह का शरण।

ऐ अल्लाह के बंदो!शरीअ़त के सम्मान,इसे अवतरित करने वाले अर्थात अल्लाह के सम्मान,इसे नकल करने वाले अर्थात पैगंबरों के सम्मान और इसका प्रचार प्रसार करने वाले अर्थात आ़लिमों एवं मुसलेहीन के सम्मान की अनिवार्यता को बयान करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है,जो व्यक्ति इस मार्ग का उल्लंघन करेगा वह बड़े खतरे का सामना करेगा।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित

परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि उपहास करना यहूदियों की विशेषता है,उन्होंने अल्लाह तआ़ला का उपहास करनते हुए कहा: يد الله مغلولة

अर्थात:अल्लाह के हाथ बँधे हुए हैं।

अधिक कहा: إن الله فقير ونحن أغنياء

अर्थात:अल्लाह निर्धन और हम धनी हैं।

इसी प्रकार मोमिनों का उपहास करना काफिरों की पहचान है,अल्लाह तआ़ला ने उन के उपहास करने को अपराध कहा है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

إن الذين **أجرموا** كانوا من الذين آمنوا **يضحكون** * وإذا مروا بهم **يتغامزون** * وإذا انقلبوا إلى أهلهم انقلبوا **فكهين** * وإذا رأوهم قالوا إن هؤلاء **لضالون**.

अर्थात:पापी (संसार में) ईमान लाने वालों पर हंसते थे।और जब उन के पास से गुजरते तो आँखें मिचकाते थे।और जब अपने परिवार में वापिस होते थे।और जब उन्हें (मुमिनों को) देखते तो कहते थे:यही भटके हुये लोग हैं।

इसी प्रकार मोमिनों का उपहास करना मोनाफिक़त (द्विधावाद) की पहचान और मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) का गुण है,जो ईमान तो देखाते हैं,किन्तु अपने अंदर रह़मान के धर्म से घृणा छुपाए रखते हैं,इन में धर्मनिरपेक्ष और उदारवादियों और उन जैसे अन्य लोग भी शामिल हैं,वह भालाई का आदेश देने और पाप से रोकने वालों का उपहास करते हैं,हिजाब का उपहास करते हैं,आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ह़दीस में आए कुछ उपचारों एवं इलाजों का उपहास करते हैं उदाहरण स्वरूप ऊूंट के पैशाब से इलाज करना। अलह़मदुलिल्लाह अल्लाह ने उन के षड्यंत्रों को विफल कर दिया और वे किसी भी चीज़ से लाभान्वित नहीं हुए,अत: यूरप में गैर मुस्लिमों के चिकित्सा केंद्रों से अनेक चिकित्सा शोध सामने आ चुके हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि ऊूंट के पैशाब से इलाज करना सही है,जैसा कि आप की ह़दीस में आया है।

उपदेश की समाप्ति:

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما)

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी